

an>

Title: Need to set up new thermal power plants at Chandrapura and Bokaro in Jharkhand.

श्री रवीन्द्र कुमार पाण्डेय (गिरिडीह): झारखण्ड का औद्योगिक जिला बोकारो के चन्द्रपुरा में दामोदर घाटी निगम (डी.वी.सी.) द्वारा 1960 के दशक में 1883 एकड़ भूमि अधिग्रहित कर चन्द्रपुरा ताप विद्युत केन्द्र की कुल छः ईकाइयाँ क्रमशः स्थापित की गई थीं। जिसमें से 4,5,6 नं. इकाई दशकों पूर्व तकनीकी कारणों से बंद की जा चुकी हैं और 130X3 मेगावाट क्षमता की 1,2,3 नं. इकाई से अनवरत उत्पादन जारी रहने के बावजूद भी विगत वर्षों में आधिकारिक तौर पर रिटायर घोषित की जा चुकी हैं। वर्तमान में नव स्थापित 250X2 मेगावाट क्षमता की 7,8 नं. इकाई से वर्ष 2010-11 से व्यवसायिक उत्पादन जारी है। लेकिन पुरानी छः ईकाइयों के बंद होने से उसमें वर्षों से कार्यरत ठेका श्रमिकों के समक्ष रोजी-रोटी की गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है और अप्रत्यक्ष रूप से हजारों लोगों का रोजगार प्रभावित होने के कारण उस क्षेत्र का सामाजिक व आर्थिक विकास अवरुद्ध हो गया है। इसलिए मेरे द्वारा सभी सक्षम स्तर पर 630X2 मेगावाट क्षमता की दो सुपर क्रिटिकल ईकाई स्थापित करने की माँग लगातार की जा रही है। क्योंकि चन्द्रपुरा ताप विद्युत केन्द्र कोयलांचल के हृदय स्थली में स्थित है। यहाँ नई ईकाई स्थापित करने के लिए आवश्यक रेल, रोड, वाटर आदि की बेहतर कनेक्टिविटी के साथ-साथ भूमि, स्थाई श्रमबल, कोल हैंडलिंग प्लांट, वाटर सप्लाई सिस्टम, हेवी मशीनरी अनुरक्षण भवन, स्टोर शेड, रेलवे यार्ड, स्विच यार्ड, कंप्रेसर हाउस, ऐश पॉड सहित तमाम एक्जलरी यूनिट के अलावा आवास, अस्पताल, विद्यालय, अतिथि गृह, क्लब, कैंटीन आदि लगभग 70 प्रतिशत बुनियादी सुविधा पूर्व से उपलब्ध है। इसी प्रकार बोकारो थर्मल में डी.वी.सी. द्वारा 1980 के दशक में 210X3 मेगावाट क्षमता की स्थापित तीन ईकाइयों में से 1,2 नं. इकाई को आधिकारिक तौर पर रिटायर घोषित किया जा चुका है, वहाँ भी उपरोक्त तमाम सुविधा पूर्व से उपलब्ध हैं।

अतएव मेरा आग्रह है कि चन्द्रपुरा एवं बोकारो थर्मल में उपरोक्त तमाम सुविधा की उपलब्धता के कारण दोनों स्थानों पर 630X2 मेगावाट क्षमता की नई तापीय ईकाई स्थापित की जाए। क्योंकि लगभग 70 प्रतिशत बुनियादी सुविधा की उपलब्धता के कारण औसत लागत से न्यूनतम लागत पर

630X2 मेगावाट क्षमता की दो-दो नई ईकाइयों की स्थापना हो सकती है। उक्त दोनों स्थानों पर नई ईकाइयों की स्थापना से हजारों ठेका श्रमिकों के समक्ष उत्पन्न रोजी-रोटी का संकट दूर होगा। देश में 24X7 बिजली की आवश्यकता पूर्ण होने के साथ-साथ उस क्षेत्र का सामाजिक एवं आर्थिक विकास करने हेतु डी.वी.सी. की स्थापना का उद्देश्य भी पूर्ण होगा।